श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

श्रावण मास साधना: १७ अगस्त २०२३ – १४ सितम्बर २०२३

१) शिव साधना:(हर सोमवार)

विनियोग - अस्य श्रीसाम्बसदाशिव पूजन मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः पंक्तिश्छन्द: श्रीशिवो देवता ॐ बीजं नमः शिवाय कीलकं मम श्रीसाम्बसदाशिव प्रीत्यर्थं पूजने विनियोगः।

ऋक्यादिन्यास - वामदेव ऋषये नमः (शिरसि), पंक्तिश्छन्दसे नमः (मुखे), श्रीशिवदेवतायै नमः (हृदये), ॐ बीजाय नमः (गुह्ये), नमः शक्तये नमः (पादयोः), शिवाय कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।

कर- हृदयादिन्यास-

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः।- ॐ नं तर्जनीभ्यां स्वाहा।

ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ शिं अनामिकाभ्यां हुम्।

ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ यं करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।

इसी प्रकार **'ॐ नं मं शिं वां यं'** अक्षरों से हृदयादि न्यास करे।

ॐ ॐ हृदयाय नमः १। ॐ नं सिरसे स्वाहा २। ॐ मं शिखायै वषट ३। ॐ शिं नेत्रत्रयाय वौषट ४। ॐ वां कवचाय हुं ५ ॥ ॐ यं अस्त्राय फट् ६।

ध्यान-

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंचवक्त्रंत्रिनेत्रं,

शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्।

नागं पाशं च घण्टां प्रलयहुतवहं साङ्कुशं वामभागे,

नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥

मंत्र-

ॐ नमः शिवाय।

जप संख्या :- ११ माला

सामाग्री :- रुद्राक्ष माला

२) <u>अमोघ सिद्दि शिव कवच स्तोत्र:(हर सोमवार एक बार)</u>

विधान:- साधक या साधिकाये , सफेद वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा के ओर बैठे और सामने गुरु चित्र और शिवलिंग लगाकर पंचोपचार का पूजन कर साधना आरंभ करे | श्रावण मास के हर सोमवार को एक बार पाठ करे |

अमोघ सिद्धि शिव कवच स्तोत्र

नमस्कृत्वा महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम् ।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वंरक्षाकरं नृणां ।।
शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः ।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम् ।।

हृत्पुण्डरीकान्तर-सन्निविष्टं स्वतेजसा व्याप्त-नभोऽ-
वकाशं ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत् परानन्दमयं
महेशं ।।

ध्यानावधूताखिल-कर्मबन्धश्चिरं चिदानन्द-निमग्न-
चेता: ।
षडक्षर-न्यास-समा-हितात्मा शैवेन कुर्यात् कवचेन-
रक्षां ।।

मां पातु देवोऽखिल-देवतात्मा संसार कूपे पतित
गभीरे ।
तन्नाम दिव्यं वरमन्त्र मूलं धुनोतु मे सर्वमघहृदिस्थं ।।

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिर्ज्योतिर्मया-नन्दघन-
श्चिदात्मा ।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेक: स ईश्वर: पातु भयाद-
शेषात् ।।

यो भू स्वरूपेण विभात विश्वं पायात् स भूमे-
र्गिरीशोऽष्टमूर्ति: ।
योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति सञ्जीवन सोऽवतु
मां जलेभ्य: ।।

कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति
भूरिलील: ।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादि-भीतेरखिलाच्च
तापात् ।।

प्रदीप्त विद्युत् कनकावभासो विद्यावराभीति-
कुठार-पाणि: ।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्र: प्राच्यां स्थितं रक्षतु
मामजस्रं ।।

कुठार-खेटांकुश-पाश-शूल-कपाल-ढक्काक्ष-गुणान्
दधान: ।
चतुर्मुखो नीलरुचि-स्त्रिनेत्र: पायादघोरो दिशि
दक्षिणस्यां ।।

कुन्देन्दु-शंख-स्फटिकावभासो वेदाक्ष माला
वरदाभयांक: ।
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभाव: सद्योधिजातोऽवतु मां
प्रतीच्यां ।।

वराक्ष-मालाभय-टंक-हस्त: सरोज-किञ्जल्क-
समानवर्ण: ।
त्रिलोचनश्चारु-चतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि
वामदेव: ।।

वेदाभयेष्टांकुश-पाश टंक-कपाल-ढक्काक्षक-
शूलपाणि: ।
सित-द्युति: पंचमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परम-
प्रकाश: ।।

मूर्द्धानमव्यान् मम चन्द्रमौलिर्भालं ममाव्यादथ
भालनेत्र: ।
नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्र हारी नासां सदा रक्षतु
विश्वनाथ: ।।

पायाच्छ्रुती मे श्रुति-गीत-कीर्ति: कपोल-मव्यात्
सततं कपाली ।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु
वेदजिह्व: ।।

कण्ठ गिरीशोऽवतु नीलकण्ठ: पाणिद्वयं पातु पिनाक-
पाणि: ।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहुर्वक्षस्थलं दक्षमखान्तकोऽ-
ऽव्यात् ।।

ममोदरं पातु गिरीन्द्र-धन्वा मध्यं ममाव्यान्मद-
नान्तकारी ।
हेरम्ब-तातो मम पातु नाभिं पायात् कटिं
धूर्जटिरीश्वरो मे ।।

ऊरु-द्वयं पातु कुबेर-मित्रो जानु-द्वयं मे जगदीश्वरो-
ऽव्यात् ।
जघ-युगंपु ङ्गव-केतुरव्यात् पादो ममाव्यात्
सुरवन्द्य-पाद: ।।

महेश्वर: पातु दिनादि-यामे मां मध्य-यामेऽवतु
वामदेव: ।
त्रियम्बक: पातु तृतीय-यामे वृषध्वज: पातु
दिनान्त्य-यामे ।।

(शेष भाग पृष्ठ संख्या ३९ पर देखें)

पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु
मां निशीथे ।
गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युञ्जयो रक्षतु
सर्वकालम् ।।
अन्तःस्थितं रक्षतु शंकरो मां स्थाणुः सदा पातु
बहि स्थितं माम् ।
तदनन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां
समन्तात् ।।
तिष्ठन्तमव्याद् भुवनैकनाथाः पायाद व्रजन्तं
प्रथमाधिनाथः ।
वेदान्त-वेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः
शयानम् ।।
मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु
पुरत्रयारि ।
अरण्यवासादि-महाप्रवासे पायान्मृगव्याध उदार-
शक्तिः ।।
कल्पान्त-काटोप-पटु-प्रकोप-स्फुटाप्रहासोच्च
लिताण्डकोशः ।
घोरारि-सेनार्णव दुर्निवार-महाभयाद् रक्षतु
वीरभद्रः ।।
पत्त्यश्व-मातङ्ग-रथावरूथ-सहस्र लक्षायुत-कोटि-
भीषणम ।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनाश्छिन्द्या-न्मुडो घोर-
कुठार-धारया ।।
निहन्तु दस्यून् प्रलया-निलार्चिज्ज्वलन् त्रिशूलं
त्रिपुरान्तकस्य ।
शार्दूल-सिंहर्क्ष-वृकादिहिंस्रान् सन्त्रासयत्वीश-
धनुः पिनाकः ।।

का शेष भाग)

दु:स्वप्न-दु:शकुन-दुर्गति-दौर्मनस्य-दुर्भिक्ष-दुर्व्यसन-
दु:सह-दुर्यशांसि ।
उत्पात-ताप-विष-भीतिमसद्‌गृहार्ति-व्याधींश्च
नाशयतु मे जगताम-धीशः ।।

३) <u>कुबेर साधना :(धन आगमन/लक्ष्मी कृपा/धन समस्या निवारण हेतु) (हर बुधवार)</u>

मंत्र: || ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्यादि पतये धन धान्य समृद्दिं मे देहि दापय स्वाहा ||

विधान:- साधक या साधिकाये , पूर्व या उत्तर दिशा के ओर बैठे और सामने गुरु चित्र और घी का दीपक लगाकर पंचोपचार का पूजन कर साधना आरंभ करे | कुबेर यंत्र स्थपित कर उसकी पूर्ण पूजन करे | पकवान का भोग लगाये |

सामग्री :- कमल बीज या हकीक माला, कुबेर यंत्र

जप संख्या:११ माला

४) <u>सौभाग्य गौरी साधना:(</u>हर शुक्रवर)

मंत्र: || ॐ सौभाग्य गौरी महादेवायै नमः||

विधान:- साधक या साधिकाये ,सुबह मे सफेद वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा के ओर बैठे

और सामने गुरु चित्र,शिवलिंग और गौरी(हल्दी से निर्मित) लगाकर पंचोपचार का पूजन कर साधना आरंभ करे | स्त्री/पुरुष कोई भी विवाह हेतु २१ माला करे,सौभाग्य वृद्धि हेतु ५ माला करे | श्रावण मास के हर शुक्रवर को करे |

सामाग्री :- रुद्राक्ष माला

जप संख्या: विवाह हेतु २१ माला करे,सौभाग्य वृद्धि हेतु ५ माला

५) **वर-लक्ष्मी-साधना** – २५ अगस्त २०२३

विधान :- अष्टलक्ष्मी या विजय लक्ष्मी यंत्र,चित्र /कमलबीज और सफेद हकीक माला/ पंचोपचार पूजन/ बेसन से बना लड्डु , पूर्व या पश्चिम दिशा/ पीत वस्त्र

मंत्र :- || ॐ वर-वरद-विजयलक्ष्म्यै नमः || (कमलबीज माला)
|| ॐ श्रीं महालक्ष्मीं अभयं विजयं देहि विजयाय नमः || (सफेद हकीक माला)

जप संख्या :- १ कमलबीज माला जप और ५ सफेद हकीक माला जप

****